International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 12-01-2026; Accepted: 11-02-2026; Published: 26-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 181-183

21वीं सदी की कविता में गाँव और किसान जीवन एक सामाजिक–सांस्कृतिक विमर्श

किरण बाला
सहायक प्रोफेसर (हिंदी), जे.सी.डी. मेमोरियल कॉलेज, सिरसा, हरियाणा, भारत

सारांश
यह शोध–पत्र 21वीं सदी की हिंदी कविता में गाँव और किसान जीवन के चित्रण का विश्लेषण करता है। समकालीन कविताओं में ग्रामीण परिवेश, कृषि संकट, किसान की पीड़ा, पलायन, और बदलती सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों को संवेदनशील रूप से अभिव्यक्त किया गया है। कविता में गाँव केवल भौगोलिक स्थान नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और मानवीय मूल्यों का प्रतीक बनकर उभरता है। किसान जीवन से जुड़े संघर्ष, आशा, निराशा और आत्मसम्मान को कवियों ने यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि 21वीं सदी की कविता गाँव और किसान की समस्याओं को उजागर करते हुए सामाजिक चेतना को मजबूत करती है तथा ग्रामीण जीवन को समकालीन विमर्श के केंद्र में स्थापित करती है।

मूल शब्दः किसान जीवन, कृषि संकट, ग्रामीण संस्कृति, पलायन, सामाजिक चेतना, आर्थिक असमानता, प्रकृति और मनुष्य संबंध

21वीं सदी का हिंदी काव्य परिदृश्य सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों से गहराई से प्रभावित दिखाई देता है। वैश्वीकरण, उदारीकरण और तकनीकी विकास के इस दौर में भारतीय गाँव और किसान जीवन अनेक चुनौतियों से गुजर रहा है। इन परिवर्तनों का प्रभाव समकालीन हिंदी कविता में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। कविता ने गाँव को केवल एक भौगोलिक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक जड़ों और मानवीय संवेदनाओं के केंद्र के रूप में प्रस्तुत किया है।

समकालीन कवियों जैसे केदारनाथ सिंह, मंगलेश डबराल और राजेश जोशी ने अपनी कविताओं में ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं, किसान की समस्याओं, पलायन, बेरोजगारी और बदलती जीवनशैली को गहरी संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। उनकी कविताओं में खेत–खलिहान, मौसम, श्रम और मिट्टी के साथ किसान का भावनात्मक संबंध प्रमुख रूप से उभरकर सामने आता है।

यह शोध 21वीं सदी की हिंदी कविता में गाँव और किसान जीवन के बहुआयामी चित्रण का अध्ययन करता है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि समकालीन कविता किस प्रकार ग्रामीण यथार्थ को अभिव्यक्त करती है और किस तरह वह सामाजिक चेतना का निर्माण करती है। इस संदर्भ में कविता को एक सामाजिक दस्तावेज़ के रूप में देखा जा सकता है, जो न केवल ग्रामीण जीवन की समस्याओं को उजागर करती है, बल्कि उनके समाधान की दिशा में विचार करने के लिए भी प्रेरित करती है।

शोध का महत्व

21वीं सदी की हिंदी कविता में गाँव और किसान जीवन का अध्ययन वर्तमान सामाजिक यथार्थ को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत मूलतः एक कृषि प्रधान देश रहा है, जहाँ गाँव और किसान समाज की आधारशिला हैं। समकालीन कविता में इन दोनों की उपस्थिति न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भों में भी विशेष अर्थ रखती है।

यह शोध इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह ग्रामीण जीवन और किसान की बदलती स्थितियों को साहित्य के माध्यम से समझने का अवसर प्रदान करता है। कविता समाज का दर्पण होती है; अतः उसमें व्यक्त किसान की पीड़ा, संघर्ष, आशा और जिजीविषा हमें वास्तविक परिस्थितियों से परिचित कराती है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कविता किस प्रकार कृषि संकट, पलायन, बेरोजगारी और सामाजिक असमानता जैसे मुद्दों को संवेदनात्मक स्तर पर प्रस्तुत करती है।

साथ ही, यह शोध ग्रामीण संस्कृति, लोक परंपराओं और मानवीय मूल्यों के संरक्षण की दिशा में भी उपयोगी है। समकालीन कवि जैसे केदारनाथ सिंह और मंगलेश डबराल ने अपनी रचनाओं में गाँव और किसान जीवन को केंद्र में रखकर सामाजिक चेतना को सशक्त किया है। उनके काव्य के अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलती है कि साहित्य किस प्रकार समाज में जागरूकता और संवेदनशीलता विकसित करता है।

अतः यह शोध न केवल साहित्यिक विमर्श को समृद्ध करता है, बल्कि ग्रामीण भारत की वास्तविकताओं को समझने और उन्हें व्यापक सामाजिक संदर्भ में स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्ययन की पद्धति

प्रस्तुत शोध में 21वीं सदी की हिंदी कविता में गाँव और किसान जीवन के चित्रण का विश्लेषण करने के लिए गुणात्मक (Qualitative) शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन के अंतर्गत समकालीन हिंदी कवियों—जैसे केदारनाथ सिंह, मंगलेश डबराल और राजेश जोशी—की प्रतिनिधि कविताओं का चयन कर उनका गहन अध्ययन किया गया है।

अध्ययन की पद्धति के प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं

पाठ–विश्लेषण–चयनित कविताओं का सूक्ष्म अध्ययन कर उनमें प्रयुक्त विषय–वस्तु, भाषा, शैली और प्रतीकों का विश्लेषण किया गया है, ताकि गाँव और किसान जीवन के चित्रण को समझा जा सके।

विषयगत विश्लेषण कविताओं में उभरने वाले प्रमुख विषयकृजैसे कृषि संकट, पलायन, ग्रामीण संस्कृति, प्रकृति से संबंध और किसान का संघर्ष—को केंद्र में रखकर विश्लेषण किया गया है।

सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भः कविताओं को उनके समय और समाज के संदर्भ में देखा गया है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि समकालीन सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ कविता को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।

तुलनात्मक दृष्टिकोण: विभिन्न कवियों की रचनाओं की तुलना करके यह समझने का प्रयास किया गया है कि गाँव और किसान जीवन के चित्रण में समानताएँ और भिन्नताएँ क्या हैं।

इस प्रकार, बहुआयामी विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से यह शोध समकालीन हिंदी कविता में ग्रामीण जीवन की संवेदनात्मक और यथार्थपरक अभिव्यक्ति को समग्र रूप से समझने का प्रयास करता है।

21वीं सदी की कविता में गाँव और किसान का चित्रण

21वीं सदी की हिंदी कविता में गाँव और किसान जीवन का चित्रण बहुआयामी और यथार्थपरक रूप में सामने आता है। समकालीन कवियों ने ग्रामीण जीवन को केवल सौंदर्य और स्मृति के रूप में नहीं, बल्कि संघर्ष, परिवर्तन और सामाजिक विडंबनाओं के संदर्भ में भी प्रस्तुत किया है। इस चित्रण को निम्न प्रमुख आयामों में समझा जा सकता है:

1. ग्रामीण जीवन का सांस्कृतिक और भावनात्मक स्वरूप

समकालीन कविता में गाँव भारतीय संस्कृति और परंपरा का जीवंत प्रतीक बनकर उभरता है। कवियों ने गाँव को प्रकृति, सामूहिकता और मानवीय रिश्तों की गरमाहट से जोड़कर देखा है। खेत–खलिहान, ऋतुओं का चक्र, लोक–त्योहार और पारिवारिक संबंध कविता में संवेदनात्मक रूप से व्यक्त होते हैं। कवि जैसे अनामिका ग्रामीण जीवन की स्मृतियों और सांस्कृतिक जड़ों को अपनी कविताओं में सहेजते हैं, जिससे गाँव एक जीवंत अनुभव के रूप में सामने आता है।

2. किसान जीवन का संघर्ष और यथार्थ

21वीं सदी की कविता में किसान का जीवन संघर्ष, असुरक्षा और आर्थिक दबावों से घिरा हुआ दिखाई देता है। कृषि संकट, कर्ज़, प्राकृतिक आपदाएँ और बाज़ारवादी व्यवस्था ने किसान के जीवन को प्रभावित किया है। कवियों ने इन परिस्थितियों को गहरी संवेदना के साथ चित्रित किया है। आलोक धन्वा जैसे कवि श्रम, असमानता और सामाजिक अन्याय के प्रश्नों को उठाते हुए किसान की पीड़ा और आत्मसम्मान को स्वर देते हैं। इस प्रकार कविता किसान के जीवन–संघर्ष की सशक्त अभिव्यक्ति बन जाती है।

3. आधुनिकता, पलायन और बदलता ग्रामीण परिदृश्य

समकालीन कविता में तेजी से बदलते ग्रामीण समाज का चित्र भी उभरता है। शिक्षा, तकनीक और रोज़गार की तलाश में युवाओं का शहरों की ओर पलायन गाँव की संरचना को बदल रहा है। इससे पारंपरिक जीवन–शैली और सामुदायिक संबंध प्रभावित हो रहे हैं। कविताएँ इस परिवर्तन को संवेदनशील दृष्टि से देखती हैं और गाँव की बदलती पहचान पर विचार करती हैं। इस संदर्भ में विष्णु खरे की कविताएँ आधुनिक जीवन की जटिलताओं और ग्रामीण यथार्थ के अंतर्विरोधों को उजागर करती हैं।

इस प्रकार, 21वीं सदी की हिंदी कविता में गाँव और किसान का चित्रण केवल स्मृति या रोमानी दृष्टि तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सामाजिक यथार्थ, संघर्ष और परिवर्तन की गहरी समझ प्रस्तुत करता है।

प्रमुख कवियों के योगदान

21वीं सदी की हिंदी कविता में गाँव और किसान जीवन के चित्रण में अनेक समकालीन कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन कवियों ने ग्रामीण यथार्थ, किसान के संघर्ष और बदलते सामाजिक परिवेश को अपनी कविताओं के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है। उनके योगदान को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है:

1. केदारनाथ सिंह का योगदान

केदारनाथ सिंह की कविताओं में गाँव, मिट्टी और किसान जीवन के प्रति गहरा लगाव दिखाई देता है। उनकी कविता में ग्रामीण परिवेश केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि एक जीवंत चरित्र के रूप में उपस्थित है। वे खेत, पेड़, पानी और श्रम के माध्यम से किसान की आत्मा और उसकी संवेदनाओं को व्यक्त करते हैं। उनकी रचनाएँ ग्रामीण संस्कृति और मानवीय संबंधों की गरिमा को स्थापित करती हैं।

2. मंगलेश डबराल का योगदान

मंगलेश डबराल ने अपनी कविताओं में गाँव के बदलते स्वरूप, पलायन और सामाजिक असमानता को प्रमुखता से उठाया है। उनकी कविता में ग्रामीण जीवन की स्मृतियाँ और वर्तमान यथार्थ का द्वंद्व दिखाई देता है। वे किसान और आम आदमी के संघर्ष को सरल लेकिन प्रभावशाली भाषा में प्रस्तुत करते हैं, जिससे उनकी कविताएँ सामाजिक चेतना को जागृत करती हैं।

3. राजेश जोशी का योगदान

राजेश जोशी की कविताओं में सामाजिक यथार्थ और मानवीय सरोकार प्रमुख हैं। उन्होंने किसान जीवन की कठिनाइयों, श्रम की महत्ता और ग्रामीण समाज की विसंगतियों को तीखी दृष्टि से देखा है। उनकी कविता में व्यंग्य और संवेदना का संतुलित संयोजन मिलता है, जो गाँव और किसान जीवन की जटिलताओं को उजागर करता है।

4. अनामिका का योगदान

अनामिका ने अपनी कविताओं में ग्रामीण जीवन को स्त्री दृष्टि से भी देखा है। वे गाँव की सांस्कृतिक स्मृतियों, पारिवारिक संरचना और किसान परिवारों में स्त्रियों की भूमिका को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं। उनकी कविताएँ ग्रामीण जीवन के मानवीय और भावनात्मक पक्ष को समृद्ध करती हैं।

इस प्रकार, इन प्रमुख कवियों के योगदान से स्पष्ट होता है कि 21वीं सदी की हिंदी कविता में गाँव और किसान जीवन एक केंद्रीय विषय के रूप में स्थापित है, जो सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदना दोनों को अभिव्यक्त करता है।

विश्लेषण

21वीं सदी की हिंदी कविता में गाँव और किसान जीवन का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि समकालीन कविता केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ का गंभीर दस्तावेज़ भी है। इस कविता में ग्रामीण जीवन को बहुस्तरीय दृष्टिकोण से देखा गया है, जहाँ संवेदना, संघर्ष और परिवर्तन एक साथ उपस्थित हैं।

सबसे पहले, इन कविताओं में ग्रामीण स्मृति और पहचान का गहरा भाव दिखाई देता है। गाँव को एक सांस्कृतिक आधार के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो आधुनिक जीवन की आपाधापी के बीच स्थायित्व और मानवीय मूल्यों का प्रतीक है। कवियों जैसे केदारनाथ सिंह ने गाँव को स्मृति और आत्मीयता के केंद्र के रूप में चित्रित किया है, जिससे कविता में नॉस्टैल्जिया का स्वर उभरता है।

दूसरे, कविता में किसान जीवन का यथार्थवादी चित्रण प्रमुख है। कृषि संकट, आर्थिक असमानता और श्रम के अवमूल्यन जैसे मुद्दे कविताओं में तीव्रता से व्यक्त हुए हैं। मंगलेश डबराल और राजेश जोशी जैसे कवियों ने किसान की पीड़ा और संघर्ष को

सामाजिक–राजनीतिक संदर्भों से जोड़कर देखा है। इससे कविता सामाजिक आलोचना का माध्यम बन जाती है।
तीसरे, इन कविताओं में आधुनिकता और परिवर्तन का द्वंद्व स्पष्ट दिखाई देता है। शहरीकरण, पलायन और तकनीकी विकास ने ग्रामीण जीवन को प्रभावित किया है। कविता इस परिवर्तन को न तो पूरी तरह स्वीकार करती है और न ही पूरी तरह अस्वीकार, बल्कि उसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों का संतुलित चित्र प्रस्तुत करती है।
समग्र रूप से देखा जाए तो 21वीं सदी की हिंदी कविता में गाँव और किसान जीवन का विश्लेषण यह दर्शाता है कि कविता सामाजिक चेतना को जागृत करने का सशक्त माध्यम है। यह कविता ग्रामीण यथार्थ को उजागर करते हुए पाठक को संवेदनशील और विचारशील बनने के लिए प्रेरित करती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि 21वीं सदी की हिंदी कविता में गाँव और किसान जीवन का चित्रण अत्यंत समृद्ध, यथार्थपरक और बहुआयामी है। समकालीन कवियों ने ग्रामीण जीवन को केवल स्मृति या रोमानी दृष्टि से नहीं देखा, बल्कि उसे सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भों में गहराई से समझने का प्रयास किया है। कविता में गाँव भारतीय समाज की सांस्कृतिक जड़ों और मानवीय मूल्यों का प्रतीक बनकर उभरता है, जबकि किसान जीवन संघर्ष, श्रम और आत्मसम्मान की जीवंत अभिव्यक्ति के रूप में सामने आता है। कवियों जैसे केदारनाथ सिंह, मंगलेश डबराल और राजेश जोशी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से कृषि संकट, पलायन, सामाजिक असमानता और बदलते ग्रामीण परिवेश को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है। उनकी कविताएँ न केवल ग्रामीण यथार्थ का दस्तावेज़ हैं, बल्कि सामाजिक चेतना को जागृत करने का भी कार्य करती हैं।
अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 21वीं सदी की हिंदी कविता में गाँव और किसान जीवन एक केंद्रीय और प्रासंगिक विषय के रूप में स्थापित है। यह कविता ग्रामीण समाज की समस्याओं, संभावनाओं और मानवीय संवेदनाओं को उजागर करते हुए साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बनाती है।

संदर्भ सूची

1. केदारनाथ सिंह. (2010). अकाल में सारस. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. मंगलेश डबराल. (2008). हम जो देखते हैं. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
3. राजेश जोशी. (2005). दो पंक्तियों के बीच. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. अनामिका. (2012). खुरदुरी हथेलियाँ. नई दिल्ली: सामयिक प्रकाशन।
5. सिंह, न. (2011). समकालीन हिंदी कविता: एक परिप्रेक्ष्य. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
6. शर्मा, र. (2009). हिंदी साहित्य और समाज. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
7. पांडेय, म. (2010). साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका. नई दिल्ली: राजकमल